ISSN: 3107-3557(Online)
The Knowledge Spectrum - An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

# गोदान उपन्यास में चरित्र -चित्रण विषयक विशिष्टताएं

Dr. D. M. Rathod
Associate Professor in Hindi

चिरित्र चित्रण उपन्यास का महत्वपूर्ण सौंदर्य याने तत्त्व है। लेखक कथावस्तु का विकास अपने पात्रों के व्यक्तित्व के माध्यम से करता हैं। इसलिए कथावस्तु के समान ही चरित्र चित्रण भी उपन्यास के लिए आवश्यक है। घटनाओं को विभिन्न प्रकार के पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। बिना चरित्र से कोई घटना हो ही नहीं सकती। लेखक कथावस्तु के अनुसार पात्रों की रचना करता है। पात्रों के कार्य- व्यापार, आकृति, विचार,मन के भाव आदि सब उनकी कथा पर आधारित रहता है। कथावस्तु विश्वनिय तभी रहती हैं जब उपन्यास के पात्र भी विश्वनिय हो अर्थात उपन्यास के पात्रों का भी चुनाव और उसका चुनाव और उसका चित्रण इस प्रकार किया गया हो कि उसकी आकृति, प्रकृति, उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य, उनके संवाद सभी स्वाभाविक लगें । कोई पात्र किन परिस्थितियों में क्या कार्य करता हैं, परिस्थितियों में उलझ जाने के पर उसकी मानसिक स्थिति कैसी होती है अर्थात उस समय वह क्या सोचता हैं, इन सभी बातों को उपन्यासकार स्वाभाविक रूप में पेश करता है। इस प्रकार उसके पात्र सजीव एवं विश्वनिय बन जाते हैं। इस इकाई में हम देखेंगे कि उपन्यास अपनी कथावस्तु को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए किस प्रकार के पात्रों का चुनाव करता है। चरित्र चित्रण के लिए किन- किन विधियों का चुनाव करता है। पात्रों को अधिक प्रभावशाली एवं सही बनाने के लिए लेखक किन गुणों को अधिक ध्यान में रखते है, आप इनकी जानकारी भी प्राप्त करेंगे।

हम चरित्र चित्रण का विश्लेषण करते समय देखेंगे कि लेखक ने विषयवस्तु के अनुकूल पात्रों का चयन करके किस प्रकार रचना को मौलिकता प्रदान की है। पात्रों को लेखक ने विश्वनिय और सजीव बनाया है।पाठ के माध्यम से हम यह भी जानेंगे कि मुख्य पात्र और गौण पात्र में क्या अंतर होता है तथा गौण पात्र किस प्रकार कथा को सशक्त बनाते हैं।

कोई भी कथा साहित्य में पात्रों और उनके चरित्र चित्रण का अत्यधिक महत्व होता है। इन्हीं चरित्र के माध्यम से उपन्यासकार जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करता है। बहुत सारे उपन्यास के प्रारंभ में इसलिए लिखा रहता है कि इसके चरित्र पूर्णरूपेण काल्पनिक हैं। परंतु यह सत्य नहीं होता, एक भ्रमपूर्ण कथन ही होता हैं। इसकी सत्यता की सीमा मात्र यहीं तक सीमित होती है कि पाठक उन विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों से सम्पन्न व्यक्ति को तो जानता है, पर उसके परिचित का वह नाम नहीं होता, जो उस औपन्यासिक चरित्र का नाम है। केवल नाम का फर्क हो सकता है, पर मूलभूत सत्य यही है कि उपन्यास के चरित्र और मानवीय जीवन के पात्रों में विशेष अंतर नहीं होता।

उपन्यासकार मानव जीवन ही जीता हैं, कोई दैवी जीवन नहीं। हमारे मध्य ही नहीं हमारी जीवनगत विषमताओं और कठिनाइयों से खूद उसका भी साक्षात्कार होता है और उसकी दूर्भावना का पान उसे भी करना पड़ता है। इसलिए स्वाभाविक है कि वह उस जीवन की उपेक्षा नहीं कर सकता और उसी से प्रेरणा ग्रहण कर अपने पात्रों का स्वरूप निर्धारित करता है।यह बात दूसरी है कि वे औपन्यासिक पात्र बराबर हमारी आंखों के सामने न रहें और हमारा उनका साक्षात्कार बराबर न होता रहे, पर मात्र इतने से ही हम उन्हें पूर्णतया काल्पनिक या निराधार नहीं कह सकते।

हमारे अपने जीवन में भी तो कितने ही ऐसे परिचित हैं, जिनसे रोज तो क्या, कदाचित वर्षों भी हम नहीं मिल पाते और भी कुछ मामलों में तो हम उनमें से कुछ से जीवन- पर्यन्त नहीं मिल पाते। फिर भी, हम उनके जीवन की प्रक्रियाओं, क्रिया-कलापों एवं उनकी सारी विशेषताओं से परिचित होते रहते हैं।

यहां यह अभिप्राय नहीं हैं कि उपन्यासकार वास्तविक जीवन जीने वाले मानव की उपन्यास में नकल मात्र करता है। यदि वह ऐसा करने का प्रयत्न करता है तो यह उसका दुराग्रह मात्र होगा, क्योंकि, मानव जीवन में व्यक्तियों को जीवन के क्षेत्र में गतिशील होना पड़ता हैं, जबकि औपन्यासिक पात्रों को उपन्यास के क्षेत्र में, जो आखिरकार शिल्प का एक अदभुत स्वरूप हैं।

उपन्यास जीवन के मौलिक व्यक्तियों की हूबहू अनुकृति नहीं करता। मानवीय- जीवन के केवल बाह्य क्रिया-कलापों से ही हम परिचित होते हैं,शेष बातें उपन्यासकार की कला और उपन्यास की अनिवार्य परिस्थितियों के माध्यम से ही स्पष्ट होती हैं। पात्रों की यथार्थता, उनकी जीवन्तता एवं सप्रमाणता कुछ ऐसी आवश्यक बातें हैं, जनके कारण उपन्यास के पात्रों की प्रभावशीलता में अभिवृद्धि होती है।

उपन्यास, कहानी आदि गद्य विद्याओं में लेखक कथा के विकास लिए पात्रों की रचना करता है। बिना पात्रों के कोई घटना नहीं हो सकती। रचना के अनुकूल उपन्यासकार पात्रों का चुनाव करता है। वह पात्रों की आकृति, विचार, मन के भावों, उनके द्वारा किए गए कार्यों, अनुभवों आदि का चित्रण करता है। पात्रों में स्वाभाविकता और सजीवता लाने के लिए ही वह उपर्युक्त बातों का ध्यान रखता है। पात्रों के सफल चरित्रांकन के लिए उपन्यासकार में कल्पना- शक्ति का होना आवश्यक है। अर्थात वह ठीक- ठीक कल्पना कर ले कि अमुक पात्रों में अमुक गुण कैसे लाया जाए। अमुक पात्र की मानसिक स्थिति को किस प्रकार दर्शाया जाए या अमुक पात्र से किस प्रकार कार्य करवाया जाए। किसी रचनाकार की रचना तभी प्रसिद्ध पा सकती है जब उसमें वर्णित पात्रों की रचना महान उद्देश्य को लेकर की गई हो और महान उद्देश्यों को लेकर वही उपन्यासकार अपने पात्रों की रचना कर सकता है जो स्वयं भी महत् और संवेदनशील अंतर्दृष्टि रखता हो। किसी उपन्यास के पात्रों जो जीवंतता है, उनके जो कार्यव्यापार है, उनके अंदर जो उठने वाली जो भावनाएं उन सब पर पाठकों को सहज रूप से विश्वास होने लगे। पात्रों के सुख- दुख के साथ वह भी अपने को सुख- दुखी महसूस करने लगे, तो मानना चाहिए की उस रचना के पात्र जीवंत है और संवेदना जगाने की क्षमता रखता है । कोई पात्र यदि चमत्कारी या असंभव लगने वाला कार्य करता है, तो उसकी स्वाभाविकता प्रकट नहीं होती। वैसे ही पात्र ही विश्वासु और जीवंत होंगे जिनमें सहजता होगी।

चरित्रांकन के लिए लेखक कई प्रकार की विधियां का पालन करता है। कभी लेखक स्वयं पात्रों के बारे में कुछ कहता है, कभी पात्र आपस में वार्तालाप करते हैं जिनसे उनका चरित्र सामने आता है। कभी पात्र अपने बारे में या दूसरे पात्रों के बारे में या दूसरे पात्रों के बारे में सोचता है। इससे भी उसका तथा दूसरों का पात्रों का चरित्र स्पष्ट होता है। कभी कभी लेखक प्रसंगानुकूल उन घटनाओं का वर्णन करता है जिनका पहले वर्णन नहीं किया गया हो तथा कभी पूर्व घटित घटना को प्रत्यक्ष रूप में शब्दों के द्वारा स्पष्ट वर्णित करवाता है। इन विधियों द्वारा पात्रों का चरित्रांकन सामने आता है। हम इन्हें कई वर्गों में रख सकते है:

1) विश्लेषणात्मक पद्धति

2) संवादात्मक पद्धति

3) मनोवैज्ञानिक पद्धति

4) पूर्ववुतात्मक पद्धति

उपन्यास में चरित्र -चित्रण की अनेक विधियां हैं। उन्हें हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं: १. बहिरंग प्रणाली २. अंतरंग प्रणाली। वैसे चरित्र चित्रण की दो पद्धतियां और मानी जा सकती हैं - प्रत्यक्ष या विश्लेषणात्मक और अप्रत्यक्ष या नाटकीय। पर इन दो प्रणालियों की सारी विशेषताओं का समावेश सरलता से ऊपर के वर्गीकरण में किया जा सकता है, इसलिए ऊपर के वर्गीकरण को ही स्वीकार करना अधिक सुविधाजनक होगा।

**बहिरंग प्रणाली** में पात्रों का चरित्र चित्रण कई पद्धतियों से किया जाता हैं। प्रथम तो उसके नामकरण इस प्रकार किए जाते हैं, जिससे उनके चरित्र का एक सामान्य आभास पहले ही जाता है। दूसरा ढंग यह होता है कि उपन्यासकार अपनी ही और से अपने पात्रों के संबंध में सब कुछ कह देता है। वहां पाठकों को सोचने के लिए कुछ भी नहीं रह जाता। पात्रों की अच्छाई - बुराई का विवेचन उपन्यासकार स्वयं करता चलता है और अपना निर्णय भी देता जाता है। मुंशी प्रेमचंद में इस प्रवृत्ति का आधिक्य मिलता हैं। एक उदाहरण 'गोदान' से इस प्रकार है: "मालती बाहर से तितली है,1 भीतर से मधुमक्खी। उसके जीवन में हंसी- ही हंसी नहीं है। केवल गुड़ खाकर कौन जी सकता है, और जीए भी तो वह कोई सुखी जीवन न होगा। वह हंसती है, इसलिए कि उसे उसके भी दाम मिलते हैं।उसका चहकना और चमकना इसलिए नहीं है कि वह चहकने और चमकने को ही जीवन समझती है या उसने अपने निजत्व को अपनी आंखों में इतना बढा लिया है कि जो कुछ करे, अपने लिए ही करें। वह इसलिए चहकती और विनोद करती है कि इससे उसके कर्तव्य का भार कुछ हल्का हो जाता है।" केवल इसी अंश में लेखक ने अपने पात्र की सारी विशेषताओं को स्वयं ही खोलकर प्रस्तुत कर दिया है। इस प्रणाली में व्याख्या एवं विश्लेषण का सारा उत्तरदायित्व स्वयं लेखक पर होता है।

इसलिए मानव वही है, जो हम आप उसे देखते हैं या वह स्वयं ही देखने में लगता है। मानव से भी बलवती होती है उसकी अन्त: प्रेरणाएं, जो पग-पग पर उसे निर्देशित करती है, उसके चरित्र को दिशाएं देती हैं, और उसका निर्माण करती हैं। ये अन्त: प्रेरणाएं उसके प्रत्येक आचरण, प्रत्येक व्यवहार और प्रत्येक बात की मूल में होती है। बिना इस अन्त: प्रेरणाओं को समझे हम कभी भी उस व्यक्ति को भली-भांति नहीं समझ सकते; क्योंकि मनुष्य का चरित्र आइसबर्ग के समान है, जिसका अधिकांश भाग पानी के भीतर रहता है और कुछ ही भाग ऊपर रहता है।बर्फ के उस पूरे भाग को समझने के लिए हमें पानी के भीतर छिपे हुए बर्फ के उस शेष भाग को भी भली-भांति समझना होगा; क्योंकि,वह अपूर्ण ज्ञान पर आधारित निर्णय है। उपन्यासकार भी अपने पात्रों के संबंध में पाठकों को पूर्ण ज्ञान देने के लिए उनकी अंत: प्रेरणाओं को स्पष्ट करता है। यही अंतरंग प्रणाली है। इसे 'गोदान' के एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है, 'होरी बाहर खाट पर बैठकर चिलम पीने लगा तो फिर भाइयों की याद आई। नहीं, आज इस शुभ अवसर पर वह भाइयों की उपेक्षा नहीं कर सकता। उसका ह्रदय वह विभूति पाकर विराट हो गया था। भाइयों से अलग हो गया है, तो क्या हुआ, उनका दुश्मन तो नहीं है। यही गाय तीन

साल पहले आयी होती, तो सभी का उस पर बराबर अधिकार होता और कल को यही गाय दूध देने लगेगी तो क्या वह भाइयों के घर दूध न भेजेगा या दही न भेजेगा ? एसा तो उसका धरम है। भाई उसका बुरा चेतें, वह क्यों उनका बुरा चेतें। अपनी-अपनी करनी तो अपने-अपने साथ है।"

मुंशी प्रेमचंद ने इस प्रकार चरित्र चित्रण की इन दोनों प्रणालियों का उपयोग गोदान में अत्यंत कुशलता पूर्वक किया है।हां, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उनका आग्रह बहिरंग प्रणाली पर अधिक रहा है। गोदान में मुंशी प्रेमचंद के चरित्र चित्रण पर विचार करते समय पहली बात यह ध्यान रखनी आवश्यक है कि मुंशी प्रेमचंद ने जीवन के एक विराट एवं व्यापक परिवेश को इस उपन्यास में समेटने का प्रयत्न किया है, जिसके कारण उनके चरित्र चित्रण में सूक्ष्मता की अपेक्षा स्थूलता अधिक आ गई है । जहां उन्होंने आवश्यक समझा है, अपने पात्रों के संबंध में टीका- टिप्पणी करने में हिचक नहीं प्रकट की है। इसका परिणाम यह हुआ है कि उनके पात्र सिधे और सुलझे हुए रूप में ही हमारे सामने आते हैं । उनमें जैनेंद्र, अज्ञेय या इलाचन्द्र जोशी के पात्रों की भांति मनोवैज्ञानिक उलझनें या किसी भी प्रकार की रहस्यात्मकता नहीं है, जिनके संबंध में स्वयं पाठकों को अपनी ओर से सोचने या चिंतन -मनन करने की आवश्यकता हो।

चरित्र चित्रण के संबंध में ध्यान रखने वाली दूसरी बात यह है कि मुंशी प्रेमचंद एक आदर्शवादी कलाकार थे। यथार्थ पर बल देने के बावजूद आदर्शवाद उनके लिए उपेक्षणिय नहीं था। वे इस आदर्शवाद के प्रति इतने आग्रहशील थे कि प्रायः उन्हें उपन्यास -कला को ठोकर मारनी पड़ी है। हालांकि यहां भी समझ लेना आवश्यक है कि उपन्यास के लिए किन्हीं भी बंन्धे -बंन्धाए नियमों का पालन करना अनिवार्य नहीं है, पर मुंशी प्रेमचंद ने अपने आदर्शवाद के मोह के कारण इन नियमों को जानबूझकर अनावश्यक रूप से तोड़ा है, जिसके कारण उनके पात्रों के जीवन में जो मोड़ आए हैं,वे कहीं -कहीं यांत्रिक से प्रतीत होते हैं और अस्वाभाविक लगते हैं। मालती मेहता के चरित्र में तो ऐसे यांत्रिक एवं अस्वाभाविक मोड प्रचुर मात्रा में मिल जाते हैं। सोना के ससुर का दहेज न मांगने के संबंध में लिखा गया पत्र भी मुंशी प्रेमचंद की सुधारवादी भावना के प्रति अतिरिक्त उत्साह का सूचक है।

मुंशी प्रेमचंद एक स्थान पर लिखा है,'किसी चरित्र की रूपरेखा करते समय हुलिया- नवीसी की जरूरत नहीं। दो चार वाक्यों में मुख्य -मुख्य बातें कह देना चाहिए।' इस धारणा को उन्होंने गोदान के चरित्र चित्रण में पूरी तरह निभाया है। गोदान में चरित्र चित्रण संबंधी अन्य प्रमुख विशेषता अनुभाव चित्रण की है। मुंशी प्रेमचंद पुस्तकों की पाठशाला से नहीं, जीवन की पाठशाला से साहित्य के क्षेत्र में आए थे। मानव के भाव अनुभव विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार रहते हैं, इसका उन्हें पूरा ज्ञान था। अपने पात्रों का चरित्र चित्रण करते समय उन्होंने इन भाव -अनुभव का भी चित्रण अपनी सूक्ष्म अन्तर्दृष्टि के माध्यम से किया है, जिसके कारण उनके चरित्र चित्रण में अधिक गहराई, मार्मिकता एवं प्रभावशीलता का समावेश हुआ है। ऐसे स्पष्ट करने के लिए दो एक उदाहरण गोदान से देने पर्याप्त होंगे। होरी का अपने झुर्रियों से भरे हुए माथे को सिकोड़ कर उत्तर देना, सालियों- सलहजों में हास्य -व्यंग करते समय होरी के गहरी सांवले पिचके हुए चेहरे पर मुस्कुराहट की मृदुता झलक पड़ती है।

किंतु यह सब होते हुए भी उपन्यासकार मानव जीवन के व्यक्तियों को ज्यों -का -त्यों ही अपने उपन्यासों के संसार में नहीं मिला बिठाता। ऐसा करना उसका दुराग्रह मात्र ही होगा; क्योंकि, मानव जीवन में व्यक्तियों को जीवन के क्षेत्र में गतिशील होना पड़ता है, जबकि औपन्यासिक पात्रों के क्षेत्र में, जो अन्ततोगत्वा कला का एक अन्यतम स्वरूप है। अतः उपन्यासकार जीवन के मौलिक व्यक्तियों की हूबहू अनुकृति नहीं करता। मानव जीवन के व्यक्तियों के केवल बाह्य क्रिया-कलापों से ही हम परिचित होते हैं। वे मन में क्या सोचते हैं, वहां छल- कपट है, दयाभाव है, स्वार्थ की गहन भावना है,या सहानुभूति की चरम सीमा; इन सब तथ्यों से हम पूर्णतया अपरिचित ही रहते है, जब तक कि वह व्यक्ति विशेषकर स्वयं हमसे यह न कहे कि वह ऐसा है। यह मान लेने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि यह संसार कुछ और नहीं, बाह्य प्रदर्शन का मरुस्थल मात्र है, जहां मानवीय जीवन-संवेदनाओं, व्यक्ति- मूल्य एवं सहानुभूतिपरक दृष्टिकोण का कोई मूल्य नहीं, कोई महत्व नहीं। यहां प्रत्येक व्यक्ति अपनी दुर्बलता एवं कुरूकताओं को मन में ही छिपाकर ऊपर से आदर्शवादिता का ऐसा आवरण डाल देता है कि व्यक्ति -व्यक्ति को पहचानना नितांत रूप से कठिन हो जाता है। पर उपन्यासों के क्षेत्र में ऐसा नहीं होता। उस संसार के पात्र हमारे अधिक निकट होते हैं। उसका समस्त जीवन हमारे रहस्य रहित रूप में फैला रहता है, उसका कुछ भी हमसे रहस्यपूर्ण नहीं रहता ।किन परिस्थितियों में उनके मन में किस प्रकार के भाव जन्म लेते हैं, वह क्या सोचते हैं, वह अंदर से उजले है या कल आदि सभी बातों से हम पूर्णतया परिचित रहते हैं, इसलिए उन पत्रों का मूल्यांकन करना हमारे लिए कठिन नहीं होता पर यह अंतर केवल आंतरिक भावनाओं से परिचित होने तक ही सीमित है। जहां तक उनकी चरित्र गति विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों का प्रश्न है, मानव- जीवन के व्यक्तियों से भिन्न नहीं ।

इस दृष्टि से यदि गोदान की पात्र योजना पर विचार करें तो स्पष्ट होगा कि पात्र जीवन के यथार्थ से चुने गए हैं और उसका पूर्ण व्यक्तित्व हमारे सामने स्पष्ट होता है। उनके अंतर एवं बाह्य का पूर्ण चित्र संतुलित रूप में उपस्थित करने में मुंशी प्रेमचंद को कलात्मक सफलता प्राप्त हुई है। उन पत्रों को वास्तव में मुंशी प्रेमचंद ने गढ़ा नहीं है। उनमें अनगढ़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि समाज से कुछ लोगों को चुनकर उपन्यास के परिवेश में लाया गया है और वे उसी प्रकार के आचरण व्यवहार करते हैं जैसे कि साधारण मानव जीवन में कोई भी करता हैं। गोदान की पात्र योजना की यह एक बहुत बड़ी सफलता है। इन पात्रों का हमसे कुछ भी गोपनीय नहीं रहा जाता। होरी, धनिया, गोबर,रायसाहब, मालती, खन्ना और गोविंदी आदि अनेकनेक पात्र एक- के- बाद एक हमारे सामने आते रहते हैं, पर उनके आचरण व्यवहार, रूप -रंग और क्रिया-कलाप हमसे इतने परिचित हो जाते है कि उन्हें पहचानने में जरा भी कठिनाई नहीं होती, यहां तक की बहुत से स्थान पर मुंशी प्रेमचंद के न बताने के बावजूद किसी पात्र के कुछ कहने पर हम समझ जाते हैं कि यह पात्र ऐसा झूठ कह रहा है। ऐसा उसे परिस्थितियों से विवश होकर कहना पड़ा है, नहीं तो उसके मन की यथार्थ धारणाएं तो अमुक प्रकार की है। होरी और धनिया के संदर्भ में तो ऐसे प्रसंग बहुतायत से खोजे जा सकते हैं। हीरा के भाग जाने पर होरी और धनिया का आपसी संघर्ष और फिर थानेदार के आने पर धनिया का बदला जाना, झुनिया को अपने घर में शरण देने के बाद भोला को जवाब देने वाले प्रसंग मुंशी प्रेमचंद की चरित्र चित्रण का कल के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

यदि सीमाओं की बात करें, तो प्रकृति इस मानव सृष्टि की रचना करता है और उपन्यासकार अपने संसार की। रचनाकार दोनों ही है, पर दोनों में तात्विक अंतर होता है। प्रकृति न जाने कितने व्यक्तियों का निर्माण करता है, जो बिल्कुल भी दिलचस्प नहीं होते और जिनके साथ उठना-बैठना या जिनसे निकटता स्थापित करना हम श्रेयस्कर समझते, पर उपन्यासकार, इनके विपरीत, ऐसे पात्रों का सृजन करता है, जो दिलचस्प होते हैं, जिनका उपन्यास संसार में महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह आवश्यक नहीं है कि प्रकृति द्वारा रचे गए सभी व्यक्ति इस संसार में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करें– साथ ही यह संभव भी नहीं है। कहा जा सकता है कि उपन्यास में भी तो गौण पात्र होते हैं।हां, पर उपन्यासकार उन्ही गौण पात्रों का निर्माण करता है, जो कथानक -विकास की दृष्टि से अनिवार्य होते हैं, अन्यथा नहीं। एक प्रकार से उपन्यासकार का निर्माण क्षेत्र कुछ सीमित होता है, प्रकृति का अत्यंत व्यापक।उस व्यापकता में वह महत्वपूर्ण और महत्वहीन दोनों प्रकार के पात्रों का निर्माण करता है, पर उपन्यासकार केवल आवश्यक पात्रों का ही निर्माण करता है, वह अनावश्यक पात्रों का भी निर्माण कर सकता है, पर ऐसा करने से उसका उपन्यास असफल ही रह जाता है। उसमें वह गठन नहीं आ पाता, जो एक अच्छे एवं सफल उपन्यास के लिए आवश्यक होता है।

गोदान में पहली बार पात्रों की परिकल्पना के संबंध में मुंशी प्रेमचंद की एक संतुलित दृष्टि नजर आती है। इसके पूर्व अपने उपन्यासों में वह अनेक अनावश्यक पात्रों का निर्माण डालते थे, जिनका संभालना उनके लिए कठिन हो जाता था। इसका परिणाम यह होता था कि उनके अधिकांश पात्रों को या जो अकारण ही मृत्यु को वरण करना पड़ता था, या बिना भूमिका के बीच से ही गायब हो जाना पड़ता था। पर गोदान में ऐसा नहीं हुआ है। इसमें मुंशी प्रेमचंद ने उन्ही पात्रों को स्थान दिया है, जो कथानक की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सचमुच अनिवार्य थे। इन सभी पात्रों के संबंध में यदि किसी से कहा जाए कि वह किसी भी दो पात्रों को उपन्यास से निकाल दे तो उस व्यक्ति के लिए कठिनाई उपस्थित हो जाएगी।वह ऐसे एक पात्र का भी नाम न बता पाएगा, जिसका निकाल जाना वह उचित समझता हो। गोदान में महत्वपूर्ण और महत्वहीन दोनों प्रकार के पात्र हैं। होरी,धनिया, गोबर,झुनिया, मातादीन,नोहरी, दातादीन, पाटेश्वरी,सहुआइन,भोला, मालती,महेता रायसाहब, खन्ना, आदि महत्वपूर्ण पात्र हैं। रूपा, सोना, कामता, सरोज, सूर्यप्रताप आदि एक प्रकार से महत्वहीन पात्र हैं,पर उन्हें कथानक के सूत्र में मुंशी प्रेमचंद ने इतनी कलात्मक कुशलता से पिरोया है कि वे उपन्यास के अनिवार्य अंग बन जाते हैं। वे सभी कथानक का विकास करने और उसे अंतिम परिणीति तक ले जाने में बराबर सहयोग देते हैं। गोदान के चरित्र चित्रण एवं पात्र- योजना की यह प्रमुख विशेषता है।

पात्रों के संबंध में एक बात और भी आवश्यक होती हैं। उनका वास्तविक होना आवश्यक है। अवास्तविक एवं अयथार्थ प्रतीत होने वाले पात्र पाठकों के ऊपर कोई स्थायी प्रभाव डालने में असमर्थ रहते हैं। वे क्षण भर को आकर्षित भले ही कर ले, पर प्रभाव के स्थायित्व और आकर्षक की क्षणिकता में बड़ा अंतर है। प्रभाव की प्रतिक्रिया आंतरिक होती है, आकर्षण की बाह्य। प्रभाव मध को उद्वेलित करता है, आकर्षण केवल जिज्ञासा उत्पन्न करता है। वह वासना त्मक होता है,अतः जब भी ऐसा प्रतीत होता है कि इन पात्रों की

क्रियाएं, आचरण एवं व्यवहार अमानवीय हैं, इस सृष्टि के नहीं, अपितु कल्पना-जगत के हैं, या माध्यमिक धरातल के हैं, वही वह पात्र असफल होते हैं। वास्तव में उपन्यास- रचना किसी निश्चित उद्देश्य को सामने रखकर होती है। केवल मनोरंजन या कल्पनालोक का निर्माण करना उपन्यासकार का दायित्व नहीं है। उसका दायित्व सत्यान्वेषण, मूल्य- निर्माण और दिशा निर्देशन का है। अपने अनुभवों को उपन्यास के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाना ही इसका उद्देश्य होता है और इसकी पूर्ति औपन्यासिक पात्र ही करते हैं। अतः इन पात्रों का वास्तविक होना आवश्यक है, क्योंकि तभी उपन्यासकार का उद्देश्य भी सफलतापूर्वक पूर्ण होता है।

यही कारण है कि गोदान में धनिया, होरी, गोबर, झुनिया आदि पात्र हमारे अत्यंत निकट प्रतीत होते हैं। उनमें वास्तविक और जीवन के प्रति सच्चाई है, संघर्ष के प्रति ईमानदारी है। उनमें यथार्थ की वह छाया प्रत्येक क्षण प्रतिबिंबित होती रहती है, जो उन्हें औपन्यासिक पात्रों की सीमा से एक कदम आगे बढ़ाकर माननीय बना देती है। उनके हाव- भाव वेश- भूषा, आचार व्यवहार सभी इतने यथार्थ प्रतीत होते हैं कि साधारण मानव और उनमें भेद करना कठिन हो जाता है शिक्षक को तो यह विश्वास करना भी कठिन हो जाता है। एक क्षण को तो यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि उपन्यास के पात्र है, हमारे आसपास, चारों तरफ रहने वाले लोग नहीं, जिन्हें हम रोज देखते हैं, जिनके साथ हम रोज उठते- बैठते हैं। डॉ. रामविलास शर्मा ने एक स्थान पर लिखा है कि चरित्र चित्रण के लिए शब्द चित्र ही एक साधन नहीं है; ज्यादा काम वार्तालाप से लिया जाता है। पात्रों की बातचीत से उनके चरित्र की विशेषता दिखाने में मुंशी प्रेमचंद ने कमाल किया है। बातचीत बहुत ही स्वाभाविक होती है। शर्मा जी के इस कथन में पर्याप्त सत्यता हैं। वार्तालाप के माध्यम से चरित्र स्पष्ट करने में

अधिक नाटयता आती है और गोदान में यह बात प्रचुर मात्रा में मिलती है। श्रीमती सचीरानी के अनुसार मुंशी प्रेमचंद के प्रत्येक उपन्यास में अनेक पात्र एक साथ मिलते हैं, किंतु सबका व्यक्तित्व पृथक दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने अपने यथार्थ चित्रण के बल से उनकी व्यक्तिगत रुचि, आदर्श- भावना तथा उनके स्वभाव की विशेष प्रवृत्तियो के, इनके बातचीत, रहन- सहन, रंग रूप, चाल- ढाल और उसके विशेष लक्षणों के चित्रण द्वारा उनका सच्चा चित्र पाठकों के समक्ष उपस्थित कर दिया है। हमें ऐसा प्रतीत होने लगता है कि वह सजीव चलते-फिरते नर-नारी, बाल- बालिकाएं, वृद्ध-तरुण अपने ही संगी व सहयोगी है, उनसे हमारा निकट का संपर्क है, हमारे हृदय को वे आकर्षित कर लेते हैं, अपनी और बरबस खींचते हैं, हम उनसे प्रसंगानुसार प्रेम तथा द्वेष करते हैं, उनकी हंसी के साथ हमारा आहर्द फूट पड़ता है, उनके आंसुओं के साथ हमारे अश्रु भी ढुलक पडते है।वे हमारी राग- विराग की वृत्तियों से इतना गहरा सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं, हमारे जीवन में इतने धुल -मिल जाते हैं, हम पर अपना व्यापक और स्थायी प्रभाव छोड़ जाते हैं कि हम उन्हें आजन्म नहीं भूल पाते।

गोदान में स्थिर पात्र भी है विकासशील पात्र भी। स्थिर पात्र अपरिवर्तनशील होते हैं। जीवन के सुख- दुख, करुणा एवं उल्लास, विषम अथवा अनुकूल परिस्थितियों– किसी का भी उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। वे समान स्थिति में ही रहते हैं। वे पात्र वास्तव में किसी-न-किसी वर्ग के प्रतिनिधि बनकर ही आते हैं। उपन्यासकार उस वर्ग की सारी प्रमुख

विशेषताएं एसे पात्रों में भर देता है और इन पात्रों से उस वर्ग के लोगो की समस्त सामान्य विशेषताओं का परिचय प्राप्त किया जा सकता हैं। गोदान में होरी स्वयं अपने में कोई पात्र नहीं हैं। वह भारत के उन असंख्य सीधे-सादे धर्म में गहन आस्था रखने वाले एवं नैतिकता का विशिष्ट मूल्यांकन करने वाले कृषकों का प्रतिनिधि हैं। जो जीवन भर संघर्षरत रहते हैं, जिन्हें परिस्थितियों की विषमता सदैव पराजित करती रहती हैं और अंत में उनकी अत्यधिक सज्जनता एवं आदर्शवादिता ही ले डूबती हैं। ऐसे पात्र स्वयं नहीं बदलते। उनके संबंध में केवल हमारी धारणा ही परिवर्तित होती हैं। इन पात्रों की कल्पना में एक लाभ यह होता है कि उपन्यासकार को बार-बार उनका परिचय देने की आवश्यकता नहीं पड़ती। होरी और धनिया के संबंध में मुंशी प्रेमचंद को बार-बार यह आवश्यकता नहीं पड़ती कि उनका परिचय दें और विशिष्ट परिस्थितियों में उनके किए गए आचरण को समझाएं या उनका स्पष्टीकरण करें। वे जैसे ही सामने आते हैं, पाठक उन्हें सहज ही पहचान लेते हैं; क्योंकि, वे जानती है कि इस पात्र की यह विशिष्ट प्रवृत्ति है,शुरू इसमें परिवर्तन होना संभव नहीं है।

होरी जैसे स्थिर पात्रों की परिकल्पना का लाभ यह होता है कि वे बराबर ही पाठकों की चेतना में स्मरणीय रहते हैं। उपन्यास को वे समाप्त कर देते हैं, छोटी-मोटी घटनाएं उन्हें भूल भी जाती हैं, पर होरी और धनिया जैसे पात्र उन्हें कभी नहीं भूलते। इसका एकमात्र कारण उनकी स्थिरता और परिस्थितियों में अपरिवर्तित रहना ही होता है। होरी के जीवन में न जाने कितनी विषम परिस्थितियां आई, पर वह कभी परिवर्तित नहीं हुआ। उसकी आदर्शवादिता कभी खंडित नहीं हुई। वह टूटकर बिखर गया, पर कभी झुका नहीं। इसी कारण वह पाठकों के लिए स्मरणीय बना रहता है।एच.जी.वेल्स के सभी उपन्यासों के पात्र स्थिर है। चार्ल्स डिकेंस के भी अधिकांश पात्र स्थिर है। मुंशी प्रेमचंद के अधिकांश उपन्यासों के पात्र स्थिर है।

गोदान में मालती, मेहता, रायसाहब, ओंकारनाथ आदि विकसनशील पात्र है। स्थिर पात्रों के विपरीत विकसनशील पात्र परिवर्तनशील होते हैं, उन पर परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ता है। जीवन के सुख-दुख, करुणा एवं उल्लास, आशा और निराशा उनके जीवन में नई दिशाएं निर्मित करती है। वास्तव में ये पात्र परिस्थितियों के प्रवाह में ही बहते चलते हैं और विकास प्राप्त करते रहते हैं। उनमें जो भी परिवर्तन होता है, उनके लिए उपन्यासकार को यथेष्ट प्रमाण देना पड़ता है, जिससे वे परिवर्तन अनायास न प्रतीत हो और उनकी सामाजिकता नष्ट न हो जाए। गोदान में ही मालती और मेहता में होने वाले परिवर्तनों का मुंशी प्रेमचंद ने बड़ी सूक्ष्मता से अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसलिए वे हमारे लिए अप्रत्याशित नहीं प्रतीत होते। ओंकार नाथ की ही सिद्धांतवादिता की डींग हांकना, प्रत्येक परिस्थितियों में अपने स्वार्थ के अनुसार रंग बदलने का आधार मुंशी प्रेमचंद ने कुशलतापूर्वक बताया है। ऐसे पत्रों के परिवर्तन के मुंशी प्रेमचंद ने पर्याप्त कारण दिए हैं तथा उनके अंतरमन का अपनी सूक्ष्म अंतर्दृष्टि से गहरा विवेचन प्रस्तुत किया है, जिससे उनकी स्वाभाविकता बराबर बनी रहती है।

**संदर्भ- ग्रंथ सूची:**

1. डा.सुरेश सिनहा, गोदान: एक विवेचन, रीगल बुक डिपो, प्रकाशन, दिल्ली 1992 पृष्ठ-41
2. डा.सुरेश सिनहा, गोदान: एक विवेचन, रीगल बुक डिपो, प्रकाशन , दिल्ली 1992 पृष्ठ - 45

3. राबर्ट लिडिल: ए ट्रीटाइज आंव नोवेल, चिंतन प्रकाशन, कानपुर 1960 पृष्ठ 91
4. जी.डब्ल्यु.एल्पोर्ट : पर्सनालिटी, साइकोलॉजिकल इन्टरप्रेटेशन, 1951 पृष्ठ- 35
5. डो. कुमार विश्वास, आधुनिक हिन्दी साहित्य,पराग प्रकाशन, पटना - 1965 पृष्ठ -55
6. राय डा. गोपाल, उपन्यास का शिल्प, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना - 1963 पृष्ठ -35